बी.एच.आई.सी.-108: आधुनिक पश्चिम का उदय-II

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: **BHIC-108**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी. -108 /ए.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंक: **100**

नोट: यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) प्रबुद्धता के अर्थ को परिभाषित कीजिए और प्रबुद्धता के मुख्य विचारों पर चर्चा कीजिए। 20

2) धर्म सुधार से आप क्या समझते हैं? इसके साथ प्रमुख रुझानों पर चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) क्या हम सत्रहवीं शताब्दी के संकट को सामान्य संकट कह सकते हैं? स्पष्ट कीजिए। 10

4) सत्रहवीं शताब्दी के अंत और अठारहवीं शताब्दी की शुरुआत में यूरोपीय विस्तार की प्रकृति पर चर्चा कीजिए। 10

5) 1500 और 1800 के बीच यूरोप में जनसांख्यिकीय रुझानों का संक्षिप्त विवरण दीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) राजनीतिक सिद्धांत (थॉमस हॉब्स और जॉन लॉक) 6

7) अंग्रेजी क्रांति के मुख्य मुद्दे 6

8) महिलाएं और आधुनिक विज्ञान 6

9) ब्रिटेन में कृषि विकास 6

10) पुस्तक उत्पादन 6

1) प्रबुद्धता के अर्थ को परिभाषित कीजिए और प्रबुद्धता के मुख्य विचारों पर चर्चा कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

प्रस्तावना

प्रबुद्धता अथवा प्रबोधन (Enlightenment) मुख्यतः सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में यूरोप में विकसित ऐसी व्यापक बौद्धिक-सांस्कृतिक धारा थी, जिसने मनुष्य को परंपरागत अधिकारों के स्थान पर विवेक, निरीक्षण, अनुभव और तर्क के आधार पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। इसका अर्थ केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, बल्कि समाज, शासन, धर्म और नैतिकता की स्थापित मान्यताओं की आलोचनात्मक जाँच करना भी था। इमैनुएल कांट ने इसे मनुष्य का स्वयं आरोपित अपरिपक्वता से बाहर निकलना बताया और 'अपने विवेक का प्रयोग करने का साहस करो' का संदेश दिया। प्रबुद्धता की कोई एक सर्वमान्य विचारधारा नहीं थी; फ्रांस, ब्रिटेन, स्कॉटलैंड और जर्मन क्षेत्रों में उसके अलग-अलग रूप सामने आए।

विवेक और आलोचनात्मक चिंतन

प्रबुद्ध चिंतकों का विश्वास था कि मानव बुद्धि तथ्यों की परीक्षा कर सकती है और समस्याओं के तर्कसंगत समाधान तलाश सकती है। अंधविश्वास, निराधार रूढ़ियों तथा जन्म के आधार पर माने गए विशेषाधिकारों की आलोचना की गई। रेने देकार्त की संशयवादी पद्धति और जॉन लॉक की अनुभववादी ज्ञानमीमांसा ने इस नए सोचने के ढंग को प्रभावित किया। हालांकि सभी विचारकों ने तर्क को एक ही अर्थ में नहीं समझा; अनेक चिंतक अनुभव और निरीक्षण को बुद्धि का आवश्यक आधार मानते थे।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रकृति के नियम

कोपरनिकस, गैलीलियो, केप्लर और न्यूटन से जुड़े वैज्ञानिक परिवर्तनों ने यह विश्वास बढ़ाया कि प्रकृति कुछ खोजे जा सकने वाले नियमों के अनुसार काम करती है। निरीक्षण, गणना, प्रयोग तथा प्रमाण का महत्त्व बढ़ा। वैज्ञानिक संस्थाओं, पत्रिकाओं और विद्वानों के पत्राचार ने ज्ञान को साझा करने की नई व्यवस्था बनाई। प्रबुद्ध विचारकों ने पूछा कि जब प्राकृतिक जगत को तर्कपूर्ण ढंग से